सद्गुरु
तत्व बोध
SADGURU
TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शक 32
अंक 131 | अगस्त– 2014

❋

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

❋

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

❋

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

❋

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

❋

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

❋

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

❋

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः।।

अन्नमय कोश - धारणा - स्वतंत्रा दिवस प्रार्थना

गुरू बंधुभगिनीयों से

वंदनीय दादा ने साधना सम्मेलन के दौरान एक बार सब गुरूभक्तों को यह सवाल पूछा कि "आपका अन्नमय कोश कहाँ है?" सभी ने अपने अपने पेट के ऊपर इशारा किया। तब वंदनीय दादा ने जो मुलाकात ली, उसका एक संक्षिप्त भाग नीचे दिये अनुसार है। वंदनीय दादा ने कहा था कि जीवन व्यतीत करने वाले हर एक व्यक्ति के लिए और विषेशतः गुरूमार्ग के भक्तों के लिए अन्नमय कोश को समझना और उसका विकास कर लेना यह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

हम सभी सोचते हैं कि अन्नमय कोश जो नाभी स्थान में केंन्द्रीत है, वह पेट में ही होता है और खाना खाना याने अन्नमय कोश है। लेकिन अन्न ग्रहण करना याने खाना खाना यह अन्नमय कोश का एक भाग है। असल में अन्नमय कोश सिर्फ पेट में नहीं होता तो पूरे शरीर में जो असंख्य (अगणित) पेश (CELLS) होते हैं उन पेशियों में यह अन्नमय कोश भी होता है। अन्नमय कोश का जीवन में या अपने शरीर में क्या कार्य होता है? तो जो जो अन्न इस शरीर को लगता है, वह शरीर की जरूरत पूरी करना, यह अन्नमय कोश का कार्य है। मतलब 'धारणा' यह अन्नमय कोश का प्रधान FUNCTION (कार्य) है। आत्मा और कर्म को व्यक्त होने के लिऐ देहिक माध्यम की आवश्यकता होती है। उस देहिक माध्यम को देहिक शक्ति खाना खाने से मिलती है। जिस प्रकार हर गाड़ी को चलने के लिऐ पेट्रोल/डीज़ल याने ईंधन लगता है, उसी प्रकार अन्न या खाना यह देहिक माध्यम का ईंधन है। यह अन्नमय कोश का केवल एक भाग है।

अन्न ग्रहण करने के अलावा जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य अन्नमय कोश करता है, वह वातावरण से विषयों की धारणा करना।

इस संसार में अनेक विषयों के कम्पन (VIBRATIONS) बुद्धि के माध्यम से तैयार होते रहते है। जिस प्रकार मेंदूका (मदुका ECG stands for electro encephalogram which is a mating that was designed to manure

and record the electrical activity of to brain. In Ordered to defect the brain activity above are speed successions elieletd and taken committed to a computer by wire. Vie brain activity will be selected as wavy exiles on the computer.) निकाल सकते है। उसी प्रकार विचारों के वलय वातवरण में प्रवाहित होते रहते हैं। सामान्य वलय वातावरण में विलिन हो जाते हैं लेकिन तीव्र (STRONG) विचारों के वलय वातावरण में रहते है। जिस प्रकार पृथ्वी गुरूत्वाकर्षण से सभी चीजे अपनी ओर खिचती है, उसी प्रकार विषयों के अनगिनत वलय भी वातावरण में पृथ्वी के पास होते है। नैसर्गिक रूप से हर एक व्यक्ति को भी GRAVITATIONAL FORCE होता है, जिससे वह व्यक्ति खुद का कर्म अपनी ओर खीचता रहता है। स्वाभाविक रूप से वातावरण के विषयों के वलय भी हर एक व्यक्ति की तरफ खीचे चले जाते है।

इस प्रकार के अनेक वलय विषय, कर्म, बाधा आदि विलिन होने के लिए स्वाभाविक रूप से हर एक जीवित व्यक्ति के तरफ आकर्षित होते रहते है। इस प्रकार के विषयों की वलयों की धारणा उस व्यक्ति के अन्नमय कोष याने शरीर की अनगिनत पेशीयों की विकसित–अविकसित अवस्था पर निर्भर होती है।

अन्नमय कोष की अविकसित अवस्था याने ऐहिक विषयों की धारणा आसानी से होना। जिस प्रकार हम आज खाना खाते समय जंक फूड या STREET FOOD या FAST FOOD को शुद्ध सात्विक खाने से ज्यादा पसंद करते हैं उसी प्रकार वातावरण के ऐहिक विषयों की धारणा अन्नमय कोष की अविकसित पेशीयों में आसानी से ग्रहण हो जाती है। लेकिन ईश्वरीय शक्ति या गुरू शक्ति की धारण करने के लिये मानवों को अपनी पेशीयों का विकास करके उन्हें प्रगल्भ (ज्यादा गहराई हो ऐसी बनाना पड़ता है।) पुरातन काल से जो परम्परा समाज के रीति रिवाज, देवतार्जन, औपचार आदि बताया है उससे यही कार्य अपेक्षित होता है।

जब अन्नमय कोष अविकसित होता है तो वातावरण में से अनेक ऐहिक विषय ओर वलय आसानी से धारण हो जाते हैं और वह व्यक्ति उन विषयों के और वलयों के आधीन हो जाता है तब उस व्यक्ति का मन और सद् सद् विवेक बुद्धि काम नहीं करती और उसके हाथों से कोई भयंकर घटना, गलती हो जाती है। वह विषयों के वलय उपना काम करके विलीन हो जाते है लेकिन वह व्यक्ति बाकी जिंदगी पश्चाताप करके गुजारता है।

आज के समय में हम जो संसार में इस प्रकार की तकलीफों के उदाहरण देखते है, उसके पीछे इसी प्रकार के कारण है। आज अपने देश की और पूरे विश्व की अशांति का प्रमुख कारण यही है। और उस कारण हल याने प.प. बाबा और वंदनीय दादा ने स्थापन किया हुआ यह गुरूमार्ग (मानव कल्याण) है। जिस प्रकार यह अशांती धीरे–धीरे कई सदियों में आई है उसी प्रकार शांति भी धीरे–धीरे प्रस्थापित होगी लेकिन उसके लिये हम सबने गुरूकार्य में सहयोग देना जरूरी है।

यह गुरूकार्य वंदनीय दादा ने हम सभी के माध्यम से किस प्रकार करके लेना है? हमें दी हुंई सिद्ध ऊँकार साधना और आरती साधना इन दो प्रमुख माध्यमों से गुरू यह कार्य करते है। कारण दीक्षा और महाकारण शक्ति का स्वरूप वंदनीय दादा जी ने देते समय कहा था कि समझलो कि कई हजार सूरज साथ में आ गये तो जितना तेजस्वी प्रखर स्वरूप उनका था उस से कही अधिक ऊँकार की थी जिसमें से कारण दीक्षा और महाकारण शक्ति प्रवाहित करनी थी उसे ऊँकार को सोम्य रूप देकर उसे साधना में सिद्ध किया।

जिस प्रकार सूरज की किरणें हमारे शरीर में जाकर हमें आवश्यक घटक (VITAMIN D) पहुँचाती है उसी प्रकार जब कारण और महाकारण शक्ति प्रवाहित होती है तब वह वातावरण के दूषित वलयों का नाश करती है। और उसकी के साथ संसार के अन्य व्यक्तियों के शरीर माध्यम में धारण होकर उनके पेशीयों का याने उनके अन्नमय कोष का विकास करती है।

साधना सम्मेलन का सबसे बड़ा कार्य यही है इसलिये हमारी हर रोज की ऊँकार साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है और कार्य केन्द्र पर की आरती साधाना भी यही कार्य करती है।

आज अगर हम 30 या 40 साल की उम्र में कार्य केन्द्र पर पहली दफा आये तो जीवन में उतने साल हम ऐहिक विषयों में थे। हमारे शरीर को ईश्वर, ईश्वरीय शक्ति या गुरूशक्ति धारणा करने की आदत ही नहीं थी। इस मार्ग का लाभ लेकर धीरे–धीरे हमारी पेशीयाँ विकसित होने लगी है जिससे गुरूशक्ति की धारणा बढ़ने लगी है।

इसलिये यहाँ कामकाज से पहले आरती होती है। सीधा आकर सवाल नहीं पूछे जाते तो बीड़ा आरती के पहले लगाना पड़ता है, याने अपना कर्म दादा–बाबा के सामने रख देना और आरती के शब्द ब्रह्म और स्पर्श ब्रह्म से शरीर के पेशीयों पर कार्य शुरू होता है। हमें आज भी कई सालों के बाद भी उन्हीं आरतीयों की हर समय नई मिठास अनुभव होती है, क्योंकि हर बार आरती से गुरूशक्ति का आधात हमारे माध्यम पर होता है और उसी प्रकार वातावरण में भी होता रहता है।

जब शरीर की पेशीयाँ गुरूशक्ति से विकसित होने लगती है, जो गुरूशक्ति का एक अंश उप पेशीयों में रहता है जो संसार के वातावरण के ऐहिक विषयों या अन्य दूषित वलयों को प्रतिकार करता है। अगर कोई धारणा हो भी गई तो विकसति मन और बुद्धि उस विषय को देह के याने शरीर के आधीन देखना है। याने उस विषय को शरीर पर हावी नहीं होने देता। इसलिऐ विषयें की इच्छा होने के बाद भी CONTROL करना आसान होता है।

क्या आज यह बात हम अपने–अपने अनुभव से कह सकते हैं? इस मार्ग में आने से पहले जिना गुस्सा हमें आता था, क्या उससे अब कम आता है? क्या अब हम जल्दी शांत हो जाते है? क्या अब हमारी खाने की तड़फ SELECTIVE APROACH कम हो गया है?

जीवन में हम हमेशा दूसरों को ANALYSE करते रहते है लेकिन गुरूमार्ग में हमेशा खुद को ANALYSE करना जरूरी होता है।

उसी प्रकार विकसित अन्नमय कोश में कर्म से व्यक्त होने वाले विषयों की धारणा पूरी तरह होती है, जिससे अपने हाथों से होने वाली क्रिया काय–वाचा–मन से और सम्पूर्ण ज्ञान से होती है, जो अगले जन्म की तरतूद है।

विश्वशांति के लिए आसानी से कार्यान्वित हो ऐसा यह महान गुरूकार्य वंदनीय दादा ने सिद्ध करके हमें दिया हैं आज जो जो इस कार्य में शमिल है, उस सभी को इसी स्वरूप से श्री गुरू ने चुना है कि जिनके माध्यम से यह कार्य श्री गुरू कर सके। यह कार्य कार्यावित होते रहने के लिऐ हमें दिन में 35 मिनट की ऊँकार साधना और हप्ते में एक बार कार्य केन्द्र पर आरती/अनुष्ठान/मुलाकात के लिए आना है। इसके बदले में श्री गुरू ने हमारी पिछली और आगे की अनेक पीढ़ीयाँ और हमारे अनेक जमानों की जिम्मदारी ली हैं इससे ज्यादा कोई भगवान भी हमें और कुछ दे ऐसा मुमकीन नहीं।

15 अगस्त, भारत के स्वतंत्रता के दिन प्रति राष्ट्र की प्रार्थना दिव्य पुण्य विभूतियों के मार्गदर्शन के अनुसार लिखी गई है वह आगे दी हैं इस प्रार्थना का उच्चार करके भी उपर बताये अनुसार गुरूकार्य होता है। जो करने का कर्त्तव्य हम सभी जरूर करें। कम से कम हर गुरूवार को।

वंदनीय दादा, परम पूज्यनीय बाबा और सभी दिव्य पुण्य विभूतियों की कृपादृष्टि भारत देश पर और पूरे विश्व पर हमेशा रहे यही उनके चरणों में प्रार्थना है।

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

राष्ट्र के प्रति प्रार्थना

हे भगवान! विश्व के उद्धार के लिये जो महान विभूतियाँ विश्व के लिए त्याग और बलिदान करने वाले राष्ट्रपुरूष तथा नेता, जो स्वयं कष्ट सह कर भी हर पल जूझ रहे है। उनके उपदेशों तथा आदेशानुसार हमारा आचरण पवित्र हो, ऐसी कृपा कीजिये।

अब तक हमारे द्वारा किए गए पापों तथा प्रमादों की पुनरावृति न हो। विकट, आर्थिक तथा अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परेशान होकर तथा क्षुद्र मनोविकारों के अधीन होकर, अथवा संकुचित विचारों से वशीभूत होकर हमारे मन में आलस्य, अज्ञान या अनुकरणवश उन विभूति, राष्ट्रपुरुष एवं नेताओं के प्रति अयोग्य विचार आए हों, अथवा अयोग्य उच्चार हमारे मुहँ से निकले हों, अथवा उनके आदेशों के विपरीत कोई भी कार्य हुआ हो तो उस के लिये, उन सबके प्रति में आपकी तथा उन सबकी निस्पृह भाव से क्षमा चाहता/चाहती हूँ। विश्व में सदा सुख शांति, संतोष तथा विश्व के नागरिकों में एक दूसरे के प्रति ममता और आनन्द हमेशा बना रहे। उसी प्रकार विश्व के प्रति अटूट श्रृद्धा हम सबके हृदय में सदा जागृत रहे।

उन्होंने सोचा हुआ विश्व–उन्नत्ति का महान कार्य, हम अपने शेष जीवन में पूरा करने में यशस्वी हों सकें तथा अन्य भी अनेक सामजिक सत्कृत्य करते रहें। इस प्रकार वे महान दिव्य अलोकिक विभूतियाँ और राष्ट्रपुरुष हम पर सदा खुश रहें तथा विश्व पर आपकी कृपादृष्टि इसी तरह बनी रहे।

हे प्रभु! हमारे परिवार के सभी सदस्सों को विश्व के प्रति अपना–अपना कर्त्तव्य कर्म निभाने की बुद्धि दीजिए। दुनिया के कई राष्ट्र आज सुख–समृद्धि का अनुभव ले रहे है, फिर भी "विश्व उन्नत्ति का कर्त्तव्य हर एक नागरिक पूरे प्रयत्नों से करे" इस पवित्र वचन से आपने संसार को जो पाठ पढाया है, उसके अनुसार तथा विश्व के लिए बलि चढ़े हुए वीर पुरुषों के उपकारों का बदला अपकारों से न हो ऐसी बुद्धि, हे दयानिधान, विश्व के सभी व्यक्तियों को आप दीजिये, केवल इतनी दुआ आपके चरणों में अत्यन्त दीन भाव से हम गुरूबंधु–भगिनि मांग रहे हैं।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible